अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2017) | दिनांक 20.12.2017

छठा वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

गतागत – 40

प्र.1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर लिखें – कितनी व कहाँ–कहाँ से है? 24

(क) श्रावक में – आगति व गति।
(ख) तीसरी नरक में – आगति व गति।
(ग) सम्यक्दृष्टि में – आगति व गति।
(घ) तीर्थंकर व चक्रवर्त्ती में – आगति।
(ङ) समुच्चय वैक्रिय शरीर में – आगति व गति।
(च) बादर एकेन्द्रिय में – आगति व गति।
(छ) तेजस कार्मण व औदारिक शरीर में – आगति।
(ज) अवधि दर्शन में – आगति व गति।
(झ) संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में – आगति व गति।
(ञ) स्त्रीवेद व नपुंसकवेद में – आगति।

प्र.2 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 16

(क) उर्ध्वलोक व अधोलोक में जीव के कितने व कौन–कौन से भेद पाते हैं?
(ख) संज्ञी मनुष्य के भेद कितने व कैसे होते हैं? तथा जम्बूद्वीप में मनुष्य के कितने व कौन–कौन से भेद पाते हैं?
(ग) कापोत लेश्या वाले कापोत लेश्या में जाऐं तो – आगति व गति।
(घ) मतिज्ञान, श्रुतज्ञान व मति अज्ञान श्रुत अज्ञान में आगति व गति।
(ङ) देवकुरु, उत्तरकुरु के यौगलिक तथा हैमवत् हैरण्यवत के यौगलिकों में – आगति व गति।
(च) ज्योतिष्क एवं प्रथम देवलोक तथा प्रथम किल्विषिक में – आगति व गति।

कायस्थिति – 40

प्र.3 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखें – जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें। 30

(क) पंचेन्द्रिय (ख) बादर निगोद (ग) सूक्ष्म पूथ्वी, अप, तेजस, वायु (घ) छद्मस्थ अनाहारक
(ङ) मति ज्ञान (च) उपशम वेदी (छ) सूक्ष्म काल पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं?
(ज) अवधिदर्शनी की उत्कृष्ट कायस्थिति दो छयासठ सागर से कुछ अधिक किस अपेक्षा से कही गई है?
(झ) विभंग ज्ञानी की जघन्य कायस्थिति 1 समय किस अपेक्षा से है? पूर्ण वर्णन करें।
(ञ) कृष्ण लेश्यी की उत्कृष्ट कायस्थिति 33 सागर अंतर्मुहूर्त्त क्यों कही गई है? पूर्ण व्याख्या करें।
(ट) लोभ कषायी की जघन्य कायस्थिति एक समय किस अपेक्षा से है, वर्णन करें।
(ठ) बादर द्रव्य पुद्गल परावर्त्तन से आप क्या समझते हैं?

प्र.4 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 10

(क) भव स्थिति व कायस्थिति किसे कहते हैं?
(ख) चतुरिन्द्रिय पर्याप्त की जघन्य एवं उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी है?
(ग) निगोद में अनंतकाल की स्थिति किस अपेक्षा से है?

(घ) पुद्गल परावर्तन में कौनसी वर्गणाओं का ग्रहण और परित्याग होता है?
(ङ) वचनयोगी की जघन्य कायस्थिति किस अपेक्षा से है?
(च) नपुंसक वेदी का जघन्य अन्तर कितना व किस अपेक्षा से है?
(छ) नील लेश्यी की उत्कृष्ट कायस्थिति किस अपेक्षा से है?
(ज) काय अपरीत कौन सा जीव होता है?
(झ) सयोगी केवली अनाहारक की कायस्थिति तीन समय की किस अपेक्षा से है?
(ञ) सम्यक् दृष्टि की स्थिति सादि सान्त किस कारण से है?
(ट) संयतासंयति की जघन्य कायस्थिति कितनी व किस अपेक्षा से कही गई है?
(ठ) लोभ–कषायी की जघन्य कायस्थिति किस अपेक्षा से बताई गई है?

गीतिका (पांचोंवर्ष की) – 20

प्र.5 किन्हीं चार पद्यों को अर्थ सहित लिखें – 16

(क) ''संपराय में.....पेखो रे''। (ख) ''साधु सूत्र.....में जोय''।
(ग) ''पिण बाकी रह्यो.....में ए''। (घ) ''खरच करे.....दान ए''।
(ङ) ''सबनै लब्धि.....किहां जमात''। (च) ''मोह तणी.....मझारो रे''।।

प्र.6 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 4

(क) किस व्यक्ति को तत्व की समझ जल्दी आ जाती है?
(ख) आठों कर्मों का उदय निष्पन्न किन–किन गुणस्थानों में है?
(ग) सम्यक्त्व की प्राप्ति कैसे होती है? तथा यह बात किसमें बताई गई है?
(घ) संक्षेप नय व विस्तार नय की दृष्टि से कितने द्रव्य एवं तत्व किस गीतिका में बतलाए गए हैं?
(ङ) छठे गुणस्थान में कितने योग होते हैं? तथा वहां पर दोष की स्थापना होती है या नहीं? कारण सहित वर्णन करें।
(च) सुपात्र दान देकर जो अहंकार नहीं करता है, उसका 'फल' गीतिका के आधार पर बताऐं।